मधुबन ओम् शान्ति अंक 382 मई 2024

पत्र-पुष्प

"सदा प्रसन्न व सन्तुष्ट रहने के लिए महादानी बन खुशी के खजाने का दान करो"

(दादी जी 22-04-2024)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, खुशियों के खजाने से सम्पन्न, सदा खुशी का खजाना बांटने वाले, मन की प्रसन्नता वा सन्तुष्टता का अनुभव करने वाले सभी महादानी वरदानी, सन्तुष्टमणी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बाबा ने हम सभी को ज्ञान खजाने से, खुशियों के खजाने से सम्पन्न बनाया है और सदा खुश रहने की विधि बताई है कि सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों का सोचो। जो यह संकल्प चलते कि पता नहीं मेरा पार्ट तो कुछ दिखाई नहीं देता, मेरा तो योग ही नहीं लगता, अशरीरी बनने में तो बहुत मेहनत है, मैं क्या करूं, कैसे करूं... ऐसा सोचना ही व्यर्थ है। इसकी भेंट में सदा समर्थ संकल्प करो कि याद तो मेरा स्वधर्म है, मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ... ऐसे संकल्प सदा खुशी में उड़ाते रहेंगे। भले अन्तिम पुराने शरीर में कोई न कोई बीमारी लगी रहती, लेकिन बलिहारी तो इसी पुराने शरीर की है जो बाबा से जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। तो यही खुशी के संकल्प करो कि वाह मेरा पुराना शरीर वाह! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बना दिया, इसे वाह वाह कर चलाओ, तो कभी शरीर से तंग नहीं होंगे। साथ-साथ मीठे बाबा ने यह भी समझ दी है कि इस अन्तिम जन्म में ब्राह्मण आत्माओं द्वारा भी सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं इसलिए घबराओ नहीं कि यह ब्राह्मण परिवार में क्या होता है! यह भी हिसाब-किताब चुक्तू हो तरक्की हो रही है, इसी खुशी में रहो। सभी वायदा करो कि छोटी-छोटी बातों में कभी कनफ्यूज़ नहीं होंगे, प्राबलम नहीं बनेंगे लेकिन प्रॉबलम को हल करने वाले बनेंगे। हम विश्व के मालिक के बालक हैं, बाप के हाथ में हाथ है, सदा इसी नशे में, खुशी में नाचते रहो।

बापदादा तो हम सभी खुशनसीब बच्चों की माला रोज़ सिमरण करते हैं। बाबा कहते बच्चे विजयमाला के मणके बनना तो कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना, यही खुशनसीबी है। तो सदा यही स्मृति रहे कि सारे विश्व के अन्दर सबसे श्रेष्ठ नसीब अर्थात् तकदीर हमारी है, हमारे जैसा खुशनसीब, खुशनुमा और कोई हो नहीं सकता। जब हम सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता बन गये तो दु:ख की लहर आ नहीं सकती।

बोलो, मीठे भाई बहिनें ऐसा ही अनुभव है ना! सभी ने स्वर्ग की टिकेट तो ले ली है ना! तो अब कभी वियोग में नहीं आना, सदा योगी बनकर रहना।

बाकी आप सभी बापदादा से मिले हुए होमवर्क प्रमाण दिन में बार-बार अशरीरी बनने का अभ्यास जरूर करते होंगे। बाबा ने विशेष इशारा दिया है कि बच्चे अब मन्सा सेवा के लिए टाइम फिक्स करो।

अब समय प्रमाण सभी सेवास्थानों को शान्तिकुण्ड बनाना है। किसी भी प्रकार के संसार समाचारों के विस्तार में ना जाकर, व्यर्थ और व्यक्त बातों से मुक्त रह अव्यक्ति साइलेन्स का वायुमण्डल बनाना है। अच्छा – आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा।

सभी को हमारी बहुत-बहुत दिल की दुआओं भरी याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

खुशी के खजाने से सम्पन्न, खुशनसीब, खुशनुमा बनो

1) वर्तमान समय विश्व में सबसे ज्यादा खुशी की ही आवश्यकता है, आपके पास खुशी का खजाना भरपूर है। तो सदा खुशी में रहो और दूसरों को भी खुशी में रहने का साधन दो, इससे सभी आत्मायें आपको खुशी का देवता मानेंगी। ''मैं खुशी का देवता हूँ'' - सदा अपना यह टाइटिल स्मृति में रखना।

2) आपके पास सबसे बड़े से बड़ा खजाना खुशी का है, इस खुशी के खज़ाने का दान करते रहो। जिसको आप खुशी देंगे वह बार-बार आपको धन्यवाद देगा इसलिए महादानी बन खुशी का खज़ाना बांटो। रोज़ किसी न किसी को दान जरूर करो। दान करने से मन की प्रसन्नता व सन्तुष्टता का अनुभव करेंगे।

3) रूहानी शमा को वही परवाना पसन्द है जो खुशी में गाना और नाचना जानता है, इसके लिए जो मेरे-मेरे की लम्बी लिस्ट है – मेरा पोत्रा, मेरा धोत्रा, मेरा घर, मेरी बहू... अब इसे समाप्त करो। अनेकों को भुलाकर एक बाप को याद करो तो मेहनत से छूट आराम से खुशी के झूले में झूलते रहेंगे।

4) जब किसी को कोई खजाना प्राप्त होता है या अचानक कोई को थोड़ा भी धन मिल जाता है तो खुशी में आ जाते हैं। आप बच्चों को तो ऐसा धन मिला है जो कभी भी कोई छीन नहीं सकता, लूट नहीं सकता। 21 पीढ़ी सदा धनवान रहेंगे। आपको सब खजानों की चाबी मिल गई, वह चाबी है ''बाबा''। बाबा बोला और खजाना खुला, मालामाल हो गये, तो सदा इसी खुशी में भरपूर रहो।

5) कोई भी श्रेष्ठ कर्म करने से स्वयं के प्रति भी उसका प्रत्यक्षफल खुशी और शक्ति की अनुभूति होती है और दूसरे भी ऐसी श्रेष्ठ कर्मी आत्माओं को देख पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह में आते हैं कि हम भी ऐसे बन सकते हैं। तो अपने प्रति प्रत्यक्षफल मिल जाता और दूसरों की भी सेवा हो जाती है।

6) अपने को कम्बाइण्ड समझकर हर कर्म करो, तो सदा शक्तिशाली रहेंगे और सदा अपने को रमणीक भी अनुभव करेंगे। किसी भी प्रकार का अकेलापन नहीं महसूस करेंगे क्योंकि भिन्न-भिन्न सम्बन्ध में साथ रहने वाले सदा रमणीक और खुशी का अनुभव करते हैं।

7) आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो क्योंकि आपका साथी मजबूत है इसलिए पार हो ही जायेंगे।

8) शरीर भल बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो, सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज़ हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सब सहज हो जायेगा।

9) तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों को सोचो। अगर यह भी सोचते हो कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं, अशरीरी होते नहीं, यह भी व्यर्थ संकल्प है। उसकी भेंट में समर्थ संकल्प करो, याद तो मेरा स्वधर्म है, मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ... इस प्रकार के संकल्प करो तो खुशी में उड़ते रहेंगे।

10) बलिहारी इस अन्तिम शरीर की, जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया, ऐसे खुशी के संकल्प करो – वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया। इसे वाह वाह कर चलाओ, तो कभी यह शरीर तंग नहीं करेगा।

11) इस अन्तिम जन्म में ब्राह्मण आत्माओं द्वारा भी सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राहमण परिवार में क्या होता है। यह भी हिसाब-किताब चुक्तू हो तरक्की हो रही है, इसी खुशी में रहो।

12) वायदा करो – छोटी-छोटी बातों में कभी कनफ्यूज़ नहीं होंगे, प्रॉबलम नहीं बनेंगे लेकिन प्राबलम को हल करने वाले बनेंगे। हम विश्व के मालिक के बालक हैं, इसी नशे में, खुशी में सदा नाचते रहो। बाप के हाथ में हाथ है, बाप के साथ खुशी में सारा समय नाचो।

13) बापदादा की कम्पनी और बापदादा के परिवार के हो। अभी और कहाँ क्लब आदि में जाने की आवश्यकता नहीं है। सदा चेहरे में ऐसी खुशी की झलक हो जो आपका चेयरफुल चेहरा बोर्ड का काम करे। इससे स्वत: एडवरटाइज हो जायेगी।

14) अपने सम्पन्न स्वरूप की स्टेज का अनुभव करो तो सदा खुशी में नाचते और बाप के गुण गाते रहेंगे। ऐसे खुशी में नाचते रहो जो आपको देखकर औरों का मन भी खुशी में नाचने लगे। जैसे स्थूल डाँस को देख दूसरे के अन्दर भी नाचने का उमंग उत्पन्न हो जाता है। ऐसे आप सभी सदा नाचते और गाते रहो।

15) मन की शक्ति का दर्पण चेहरा अर्थात् मुखड़ा है। खोया-खोया हुआ चेहरा और पाया हुआ चेहरा इसका अन्तर तो जानते हो। ''पा लिया'' इसी खुशी की चमक चेहरे से दिखाई दे। खुश्क चेहरा नहीं दिखाई दे, खुशी का चेहरा दिखाई दे तो अनेक आत्माओं की सेवा स्वत: होती रहेगी।

16) खुशनसीब उसे कहा जाता है जिसके जीवन में मुख्य प्राप्ति - श्रेष्ठ सम्बन्ध, श्रेष्ठ सम्पर्क, सच्चा स्नेह, सर्व प्रकार की सम्पत्ति और सफलता की हो। यह पांचों प्राप्तियां आप बच्चों को हैं। आपका अविनाशी बाप के साथ सम्बन्ध और सम्पर्क है। सर्व सम्बन्धों का स्नेह भी एक से प्राप्त है और अविनाशी सम्पत्ति से भी भरपूर हो, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, तो इसी खुशनसीबी के नशे में रहो।

17) बापदादा आप खुशनसीब बच्चों की रोज़ माला सिमरते हैं। विजयमाला के मणके बनना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना, यही खुशनसीबी है। जैसे बापदादा सदा बड़ी दिल वाले बेहद की दिल वाले हैं, ऐसे आप बच्चे भी बेहद की दिल फ्राकदिल दातापन की दिल रखने वाले, सदा दिल खुश से जहान को खुश करने वाले खुशनसीब हो।

18) सारे विश्व के अन्दर सबसे श्रेष्ठ नसीब अर्थात् तकदीर हमारी है, हमारे जैसा खुशनसीब, खुशनुमा और कोई हो नहीं सकता। स्वयं भगवान ने हमें अपना बनाया है, इसी भाग्य का वर्णन करते सदा खुशी में नाचते रहो तो मेहनत से मुक्त, सदा रूहानी मौज की जीवन का अनुभव करते रहेंगे।

19) जब सुखदाता के बच्चे मास्टर बन गये तो दु:ख तो आ नहीं सकता। दु:ख का दरवाज़ा बन्द, स्वर्ग अर्थात् सुख का दरवाज़ा खुल गया। स्वर्ग की टिकेट ले ली है ना – सदा खुशी में नाचते रहो, खुशी होगी तो दूसरे भी आपको देखकर खुश होंगे और बाप के समीप आयेंगे। आपकी खुशी बाप का परिचय देगी। कभी भी वियोग में नहीं आना, सदा योगी।

20) कितनी भी परिस्थितियां आवें, दु:ख की अविद्या वाले हो। अपने सुख के सागर से प्राप्त हुए अधिकार द्वारा दु:ख की परिस्थितियों में भी वाह मीठा ड्रामा! वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट! इस नॉलेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दु:ख को सुख में परिवर्तन कर दो। अधिकार से दु:ख के अंधकार को परिवर्तन कर मास्टर सुखदाता बन स्वयं सुख के झूले में झूलते औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनो।

21) जो भयभीत आत्मायें हैं उन्हों को शक्तिशाली बनाने वाली, दु:ख के समय सुख देने वाली आत्मायें, सुखदाता के बच्चे हो। तो सदा सुख देने की श्रेष्ठ भावना रहे। कोई आत्मा भले आप से कैसा भी व्यवहार करे लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें सदा हरेक को खुशी दो। वह कांटा दे, आप बदले में रूहानी गुलाब दो। वह दु:ख दे, आप सुखदाता के बच्चे सुख दो।

22) आप श्रेष्ठ आत्माओं के हर संकल्प में सर्व के कल्याण की, श्रेष्ठ परिवर्तन की, 'वशीभूत' से स्वतन्त्र बनाने की दिल की दुआयें वा खुशी की मुबारक सदा नैचुरल रूप में दिखाई दे क्योंकि आप सभी दाता अर्थात् देवता हो, देने वाले हो।

23) कभी भी, किसी भी बात में अगर माया से धोखा खाते हो तो धोखा खाने की निशानी है दु:ख की लहर। जरा भी दु:ख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। तो चेक करो कि किस बात में धोखा मिला, क्यों दु:ख की लहर आई? सुखदाता के बच्चे हो, तो स्वप्न भी सुख के आयें, खुशी के, सेवा के, मिलन मनाने के स्वप्न आयें। संस्कार भी बदल गये तो स्वप्न भी बदल गये।

24) आप सुख देखने, सुख देने वाले, सुखदाता के बच्चे सुख स्वरूप हो। कभी सुख के झूले में झूलो, कभी प्यार के झूले में झूलो, कभी शान्ति के झूले में झूलो। झूलते ही रहो। नीचे मिट्टी में पांव नहीं रखना, झूलते ही रहना।

25) हर संकल्प, हर बोल में विशेषता हो। सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों, ऐसे सरल स्वरुप रहो। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध एक से सर्व प्राप्ति, ऐसे एक द्वारा सदा एकरस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा खुश रहो, खुशी का खजाना बांटो। खुशी की लहर सर्व में फैलाओ, यही सच्ची सेवा है।

26) चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे-समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्तू करने में औषधी का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है।

27) विशेष रूप से अपनी मन्सा शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड़ दान करते रहो। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हो करके जाये। ऐसे अखण्ड़ महादानी बनो तब कहेंगे परोपकारी।

28) वर्तमान समय में सभी को अविनाशी खुशी की आवश्यकता है, सब खुशी के भिखारी हैं और आप दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चों का काम है–देना। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये–खुशी बांटते जाओ, देते जाओ। कोई खाली नहीं जाये। इतना भरपूर बनो।

29) सदा उमंग-उत्साह में रहना अर्थात् अपने श्रेष्ठ शान वा स्वमान में रहना। सदा इसी शान में रहो कि हम सदा खुश रहने वाले और दूसरों को खुशी बांटने वाले दाता के बच्चे, सदा देने वाले, लेने वाले नहीं।

30) हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो - हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना।

31) हमारी पालना करने वाला, पढ़ाई, श्रीमत और वरदान देने वाला, हर दिनचर्या में साथ निभाने वाला स्वयं परम आत्मा है, इस भाग्य को स्मृति में रख सदा खुशी में झूलते यही गीत गाते रहो - वाह मेरा भाग्य!

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"विकराल परिस्थितियों के समय सेकेण्ड में अशरीरी बनने का अभ्यास ही पास करायेगा" (02-07-09)

बाबा जो सुनाते हैं वो सिर्फ सुनो नहीं बल्कि उस एक एक बात का अनुभव करो तो अनुभवों की अथॉरिटी वाले बन जायेंगे। तो आपके चलन और चेहरे से उसका वो नशा वा खुशी वायुमण्डल में प्रभाव के रूप में दिखाई देगी। हमारे अन्दर ऐसी वृत्ति और ऐसा वायुमण्डल होगा तब तो हम ऐसा वायुमण्डल बना सकेंगे। अभी बाबा वायुण्मडल बनाने का अटेन्शन दिला रहे हैं लेकिन जब समय आयेगा तब यह सब बातें याद आयेगी। बाबा ने कहा तो था, क्लासेस तो होती थी लेकिन हम अलबेले रह गये। अब उस समय होगा तो कुछ भी नहीं क्योंकि करने का समय गया तो फिर क्या होगा? पश्चाताप। तो हम ऐसी लाइफ में नहीं आयें।

दुनिया में तो आजकल हर समय सबको भय और चिंता का अनुभव है, उनकी हालत देखो सभी दु:खी-अशान्त, परेशान हैं। चारों ओर हालातें नाज़ुक होती जाती हैं। बाबा भी कहते चारों ओर हाहाकार होगा क्योंकि माया भी अपना विकराल रूप धारण करेगी। प्रकृति भी छोड़ेगी नहीं। अन्त में आत्मायें अचानक ही शरीर छोड़ेंगी, उसका वायुमण्डल होगा। सेकेण्ड में कुछ भी हो सकता है। यह चारों तरफ ऐसे भयावह वायुमण्डल की सीन होगी, बाबा कहते यह पेपर होगा, ऐसे समय पर कहाँ भी सुनने, देखने वा सेवा अर्थ बुद्धि जा सकती है। लेकिन बाबा कहते ऐसे समय पर सेकेण्ड में अशरीरी होना और कहीं पर भी ध्यान नहीं जाये,

क्या भी हो जाए क्योंकि जो हो रहा होगा वो अपनी तरफ आकर्षित तो करेगा ना, फिर भी वहाँ आकर्षित न हो करके सेकेण्ड में हम अशरीरी बन जायें तब तो कहेंगे फुल पास। नहीं तो फिर नम्बरवार कोई तो अपने शरीर को सम्भालने लग जायेंगे, आत्म-अभिमानी बन नहीं सकेंगे। किसी-न-किसी के स्वभाव-संस्कार के या दृश्य के वश हो जायेंगे, इसमें भी सेकेण्ड का ही समय लगता है। तो सेकेण्ड में हम पास हो जायें उसके लिए अभी से यह प्रैक्टिस करो कि यह शरीर तो जाना ही है, यह पुरानी दुनिया तो जानी ही है तो उससे क्या प्रीत रखें? यहाँ के जो भी कुछ साधन उपलब्ध हैं वो सब अब खत्म होना ही है और हम मुसाफिर हैं और अब ड्रामा का पार्ट पूरा हुआ, घर जाना ही है इसलिए उसमें हमारी बुद्धि न जायें। तो अब रिटर्न जर्नी की एवज़ में अपने को टर्न करना है। जो चीज़ जानी है उससे मोह क्या रखेंगे! तो इतना पुरुषार्थ हमारा है? यह स्व को चेक करना है। अब अपने लिए कुछ करने का टाइम निकालो क्योंकि कभी भी कुछ भी हो सकता है इसलिए जो बाबा कहता है वो करके हम एवररेडी रहें।

बाबा तो भिन्न-भिन्न युक्तियों से हमें बातें सुनाता रहता है निरंतर लिंक जुटा रहे उसका पुरुषार्थ रहे। क्योंकि जुटना और टूटना वो अलग बात हो जाती है इसके लिए बीच-बीच में एक मिनट भी लिंक जोड़ते रहो क्योंकि बीच में कुछ हो जायें तो! लिंक टूटा और जुटा इसकी प्रैक्टिस चालू रहे। लिंक जुटा हुआ रहेगा तो निरंतर ताकत आती रहेगी। बार-बार की यह आदत अन्त में काम में आयेगी। अभी अपने तरफ अटेन्शन देना है। तो अचानक, एवररेडी और बहुतकाल इस पर अण्डरलाइन करना है। पेपर तो आयेंगे लेकिन पास होना न होना यह हमारे हाथ में ही है। बाबा एक्स्ट्रा खातिरी नहीं करता है लेकिन ताकत देता है। जो बहुतकाल से बाबा के इशारे को जानकर उस पर चलता है उसे बाबा बल तो देगा ना। तो पास होना है, पास रहना है और जो बीता उसे पास करना है। तो ऐसे ही हमारा अटेन्शन अपने पुरुषार्थ पर हो। अभी भी थोड़े समय में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बदल सकते हैं लेकिन फास्ट डबल पुरुषार्थ करना पड़ेगा तभी थोड़े टाइम में ज्यादा भाग्य बना सकेंगे। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"सदा सुखी वही रह सकता जो आज्ञाकारी और वफादार है"

(08-08-06)

बाबा हम सबको मास्टर त्रिकालदर्शी बना देता है, मूलवतन, सूक्ष्म वतन का ज्ञान बाबा ने दिया। सूक्ष्मवतन में मूवी है। हम सबको टॉकी में रहने की आदत है, मूवी में रहना नहीं आता है। मेरे को भी कहते हैं तुम बहुत बोलती हो। लेकिन जो बाबा ने सिखाया, सुनाया, उसे सुनाये बिना रह नहीं सकती। यह परिवार जो इतना बड़ा है, इसमें ऐसे कर्म करूँ जो सब कहें यह मेरी अच्छी बहन या भाई है। हम एक क्लास के स्टूडेन्ट हैं, इकट्ठे पढ़ते हैं, यह हमारी शोभा है। जो बाबा ने ज्ञान दिया है वो सब आत्मायें ग्रहण करें। हम बाबा के हैं, बाबा हमारा है, यह सब अनुभव करें। हम सब स्टूडेण्ट हैं। पढ़ाई में स्टूडेण्ट लाइफ का और उसमें पवित्रता का महत्व है। स्टडी पवित्र रहने की शक्ति देती है, स्टडी से योग लगता है।

घर जाने के लिए वृत्ति, दृष्टि, संकल्प, स्मृति क्या है, उसे चेक करना है। कौन सा संकल्प है, संकल्प में कौन सी स्मृति है, जो औरों की वृत्ति, दृष्टि और संकल्पों को चेन्ज कर रही है। हम सब यात्रा पर जा रहे हैं, यात्रा में यात्री बहुत मजबूत चाहिए, साथ-साथ जा रहे हैं इसलिए कोई चक्कर और टक्कर न हो। देही-अभिमानी होकर रहें।

भगवान कहता है मैं तुम्हारा साथी हूँ, तुम साक्षी होकर प्ले करो। परन्तु अपनी मत, अभिमान वाली मत साथ का अनुभव करने नहीं देती है। अपनी मत भले गलत नहीं है पर अभिमान वाली है, मैं सच हूँ, मैं राइट हूँ... इसके कारण देही-अभिमानी भव, यह बाबा के शब्द काम ही नहीं करते हैं।

मेरा शिक्षक रक्षक भी है, अनुभव से कहती हूँ, मानो या ना मानो। शिक्षा का उल्लंघन किया तो रक्षक क्या कर

सकता है। कम से कम बाबा की शिक्षा याद हो, तो रक्षक है बाबा। बाबा के पूंगरे (बच्चे) हैं, बाबा कैसे भी सम्भालेगा। गैरेण्टी है, जिसने याद से अपने विकर्म विनाश किये हैं, बाबा का फरमान माना है, यज्ञ की एक पेनी वेस्ट नहीं की है, समय सफल किया है, भगवान उस पर कुर्बान है। जो अपना समय और संकल्प व्यर्थ गंवाता है, भगवान उस पर कुर्बान नहीं जा सकता। वो भी ड्रामा कहके शान्त हो जाता है।

अनुभव की शक्ति लो, उसका कदर रखो। आठ शक्तियों की छतरी सदा सिर पर हो। सहन शक्ति, समाने की शक्ति, परखने की शक्ति हो... यह कंकड़ है या हीरा है, यह परख सके। मैं हीरो पार्टधारी हूँ, मेरा जीवन हीरे तुल्य है, मेरा समय हीरे समान है, मेरा संकल्प भी हीरे समान हो। संकल्प में, कर्म में, बोल में बाबा के वफ़ादार बच्चे बनो। बाबा कहे वफ़ादार बनो और हम संकल्प में बेवफ़ाई करें। ऐसे अपने ऊपर वफ़ादारी का टाइटल न लेना, तो क्या भाग्य है! आज्ञा का उल्लंघन करना, दिल से ना मानना, अपना जो विचार है वही करना। तो आज्ञाकारी जो नहीं बना वो अन्दर सुखी नहीं रह सकता। बाबा की आज्ञा है, मनमनाभव। बच्चे तुम अपना काम करो, किसी को दोषी नहीं बनाओ। अपने लिए पुण्य कर्म करो।

सावन मास बड़ा धर्माऊ है, इसका महत्व जो भी जानता है उसका बहुत भला हुआ है। कोई भी ऐसी बात हमारे संस्कारों में न हो जो मैं बाबा की आज्ञा पालन न कर सकूँ। यह हमारी लाइफ है। हमारी लाइफ से औरों को लाइफ मिले। यह सेवा सतयुग में भी नहीं करेंगे। अभी की सेवा से जो बल मिलता है उसका कदर हो। सेवा से मायाजीत तो बनते ही हैं पर निद्राजीत भी बन जाते हैं। निद्राजीत माना जिस समय सोना है सो जाओ जिस समय उठना है उस समय उठ जाओ। जागना सोना मेरे हाथ में हो।

अगर कोई कर्म किया और अभिमान आया तो बाबा फल नहीं देगा। बाबा जो सिखाता है वो करते हैं, तो कर्मक्षेत्र में बीज पड़ता जाता है। फिर मेरे को देख और करते हैं, सहयोगी बन जाते हैं। उनका भी पुण्य का खाता बन जाता है। तो एक तो बाबा जो कराता है वो हम करें और फिर हमको देख वही कर्म और करें, ऐसे ही स्वर्ग की स्थापना होती है। गैरेण्टी है। कई सोचते ज्यादा हैं, करते कम हैं, अरे चलते फिरते सेवा कर लो। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास **दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें**

"ड्रामा अच्छा है, इसमें जो होता है भले के लिए होता है, इसलिए सबके गुण देखते चलो तो चढ़ती कला हो जायेगी" (11-08-06)

जो श्रीमत पालन करने वाले हैं, उन्हें कोई चिन्ता चिन्तन करने की जरूरत नहीं है। चढ़ती कला सबका भला... चढ़ती कला का महत्व बहुत है। बाबा कहते हैं तेरे भाने सबका भला। बाबा के बोल से सच्चा रहने की कला आ जाती है। सच्चा रहने से 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। चढ़ती कला माना कहाँ रुके नहीं, कोई रोके नहीं। माया आयेगी हम उसके आगे झुकने वाले नहीं हैं। उतराव, चढ़ाव में लाने के लिए माया आयेगी। उसके आधार पर चढ़ती कला नहीं चाहिए। अन्दर अगर देह-अभिमान है तो गिरती कला जल्दी होती है। कर्म और योग का बैलेन्स कर्मयोगी बना देता है। योग माना साइलेन्स। पीस चाहिए तो साइलेन्स में जाओ। जो बोलने और सोचने वाला है उसको शान्ति कहाँ से आयेगी। बहुत टाइम जो सोचता है, उसको शान्ति नहीं आयेगी।

धर्म स्थापक आते हैं, उसके फालोअर्स उसको फॉलो करते हैं, बाबा ने हमको बताया है कि तुम अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाओ। देवता बनने के लिए दैवीगुण धारण करो। तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना राज्य पायेंगे। परमपिता परमात्मा से डायरेक्ट सीखने का भाग्य अभी है, त्याग का भाग्य भी है। ईश्वरीय परिवार से बहुत कुछ जानने सीखने को मिलता है, यह भी भाग्य अभी है।

जो भी सेवा करो, हर्षितमुख से करो, मुरझाओ नहीं। यह अपने आपको सम्भालना है। चिन्तन और सिमरण, दोनों बुद्धि में इकट्ठा नहीं रह सकते। चढ़ती कला का सिमरण करते-करते मैं मौज में बैठ गयी। सबके गुण देखते चलो,

ड्रामा अच्छा है, जो होता है भले के लिए होता है। ऐसे नहीं ये क्यों होता है। बाबा कहता है बच्चे, तुम श्रेष्ठ आत्मायें हो, ऐसे नहीं है कि कोई प्राइम मिनिस्टर, प्रेजीडेन्ट बनने की पोजीशन पाई है। लेकिन कितनी भी कोई अपोजीशन वाली बात आती है, वह श्रेष्ठ स्थिति की पोजीशन से उतार नहीं सकती। परमात्मा पिता हम सबके भले के लिए सीधे शब्दों में कहता है - तुम मेरे से ठीक कनेक्शन रखो। मेरा डायरेक्ट कनेक्शन है तो आत्मा चमकेगी जरूर। अपने को आत्मा समझने वाला समझता है - मैं बापदादा के बीच में हूँ। आत्मा हमेशा बाबा के साथ रहने के लिए तैयार रहती है। मन की जैसी स्थिति बनाओ वो स्थिति हमको खींचती है। स्थिति अपने वश में कर देती है। तो हे आत्मा अपने से पूछ मैं अपने में क्या संस्कार भर रही हूँ? मूल वतन में कैसे जाऊंगी? मूल माना सार, सूक्ष्मवतन माना शान्त, स्वीट, ऐसी स्थिति है जैसे बापदादा के पास बैठी हूँ। सूक्ष्मवतन में ऐसी फीलिंग है। अच्छे वायब्रेशन्स से बाबा के नयनों में वा दिल में समाये हुए हैं, और दिल में कुछ नहीं है। बाबा कहे तुम मेरी दिलरुबा हो।

बाबा बड़ा अच्छा लगता है माना नॉलेज अच्छी लगती है, तो खान-पान फौरन शुद्ध हो जाता है। पक्का हो जाता है, बस बाबा का हूँ। ब्राह्मण हूँ सो देवता बनना है, देवताई गुण पीछे आयेंगे, अभी मीठा बनने का बड़ा ध्यान है। परिवार बड़ा है, इसमें मीठा बनना है। न किसकी बात सुनो, न सुनाओ। परचिन्तन में नहीं आओ। कोई भी बात सुनी या देखी तो वो चिन्तन में चली गयी, फिर बाबा की याद आयेगी नहीं। फिर बाबा भी देखता है कि ये बातें तो बहुत याद करता है, बाबा की याद के लिए कहता है मुझे फुर्सत नहीं। तो बाबा को भी उसके लिए फुर्सत नहीं। सच्ची दिल वाले को तो बाबा खींचता है। कहता है तुम्हारी नज़रों के सामने हाज़िर रहता हूँ। बाबा नज़रों के सामने हो और वो नज़रों में दूसरों को रखे, तो उसे लायक कैसे कहेंगे। ये नज़र किसलिए हैं, कभी अपने से पूछो। आँखे बड़ी धोखेबाज़ हैं। आँखें जो देखती हैं फिर वही सोचती हैं। दुनिया दर-दर ठोकरें खा रही है और हम भी ऐसे रहें! इससे फायदा ही क्या! इसलिए इसका बुद्धि से वैराग्य हो, जिसको बाप का सहारा है, घर का ठिकाना है वो ठोकर क्यों खाये! खुद ठोकर खाता है तो औरों को भी डाउट होता है। क्यों न ऐसी बन जाऊं, जो भगवान के दिल में समा जाऊं, नज़रों से निहाल होकरके, बाप को नज़रों में बिठाना, यह है चढ़ती कला से सर्व का भला। अच्छा!

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सवेरे के समय बाबा से वरदान लो और शाम के समय सबको वरदान दो"

(1999)

1) आज अमृतवेले आंख खुलते ही एक आवाज सुनी जैसे कोई जोर-जोर से चिल्ला रहा है, पुकार रहा है, आवाज कर रहा है। इधर-उधर देखा कुछ नहीं नज़र आया। इतने में ही साढ़े तीन का रिकार्ड बजा, उठी। आकर बाबा के पास, बाबा की मीठी यादों में बैठी, ऐसी भासना आई बाबा बार-बार यह कह रहा है बच्ची, अब बहुत जल्दी वो दिन आना है, जब तुम्हारे विजय के नगाड़े बजने हैं। दुनिया देखती ही रह जायेगी, तुम उड़के चले जायेंगे। तुम शक्तियों की सिद्धि कहो, सफलता कहो, विजय कहो, अब बहुत जोर से सारी दुनिया में यह आवाज उठनी है, इसलिए सबको बोलो - कोई भी बीता हुआ कुछ भी न देखे, आगे-आगे बढ़ते जाओ, क्या होगा, कैसे होगा.... यह न सोच सब आगे-आगे बढ़ते जाओ। ऐसे ही सुबह के टाइम कई बार बाबा कुछ प्रेरणा दे देता है।

2) जैसे बाबा कहते हैं बच्चे तुम्हें सिद्धि स्वरूप बनना है, मैं बाबा से पूछती हूँ क्या सिद्धियों को सामने लाना है, क्या सिद्धियों को आह्वान करना है, या सिद्धि स्वरूप बनना है? या सिद्धि स्वरूप हैं? उसी घड़ी आता मैं ये सूक्ष्म संकल्प भी क्यों उठाऊं, मुझे सिद्धि स्वरूप बनना है। क्यों न समझूं मैं हूँ ही सिद्धि स्वरूप। न हूँ तो संकल्प उठाऊं। शक्य हो तो

पुरुषार्थ करूँ। हमारे मस्तक पर लिखा है तुम चमकती हुई मणियां हो, मणी का अर्थ ही है चमकना। कल्प पहले भी चमक वाली मणी थी, आज भी हूँ, हमें नशा रहता हम हैं ही बाबा की चमकती हुई मणियां, सिद्धि स्वरूप मणियां, हम कोई झूठे पत्थर नहीं हैं, हम तो सच्चे पन्ना और माणिक हैं, तब तो हमारे ऊपर पुखराज परी, नीलमपरी का गायन है। हर बात में मैं अपने को सफलतामूर्त, विजयी देखती हूँ, मैं कभी दिलशिकस्त नहीं होती हूँ।

3) अमृतवेले ऐसी मीठी-मीठी रुह-रिहान बाबा से चलती है। बाबा हम बच्चों को रोज़ हर तरह से पुश करता। (धक्का देता) सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का। यह कैसे? सवेरे जब मैं बैठती तो जैसे ऊपर से फोकस की तरह सारे वरदान बाबा मुझे दे रहा है। ऐसे लगता जैसे किसी चीज़ पर सर्व प्रकार के लाइट के फोकस दिये जाते - वैसे सारे वरदानों का फोकस बाबा देता और मस्तक चमकता जाता - गोल्डन होता जाता। इन जटाओं पर जैसे स्नो फाल की तरह लाइट का फॉल बह रहा है। ऐसे मैं स्वयं के साथ-साथ सबको देखती हूँ। सवेरे-सवेरे बुद्धि दिव्य रहती, देह-भान से परे बाबा में रहती, सतोप्रधान होती, उस टाइम बाबा से सहज ही बुद्धि जुटी होती, वह घड़ियां ऐसे अनुभव होती जैसे सारे दिन के लिए बाबा सब कुछ कर देता है, तब कहा अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का। कई बार बाबा गुह्य ज्ञान की लहरों में ले जाता, कई बार सर्विस की नई-नई प्रेरणायें देता, शक्तियां भरता फिर कहता बच्ची, मैंने छत्र रख दिया - अब जाओ सारा दिन राजधानी में सेवा करो, सिंहासन पर तो छत्रधारी ही बैठेंगे ना। कई बार सुबह सुस्ती होती, इधर सुस्ती आती उधर चुस्त करने बाबा उठा ले जाता, फिर कहता देखा उठी तो क्या पाया? बाबा कहता बच्ची, सुस्त नहीं बनो, उठो तो छत्र रखूँ, अमृतवेले बाबा छत्रछाया का छत्र रख देता है। माया से विजय पाने के लिए बाबा छत्र पहना देता है, कोई भी दुश्मन नहीं आता। दूर से ही भाग जाता, इसलिए कहते हैं सवेरे-सवेरे बाबा की छत्रछाया के नीचे बैठो तो छाया में रहने से माया परे हो जायेगी।

4) मैं देखती हूँ अमृतवेले बाबा के सामने जैसे अनेक बच्चे बैठे हैं - बाबा सबके ऊपर हाथ फिराता जाता, यह कोई भक्ति नहीं, बाबा हम सबके ऊपर सिर से पांव तक हाथ घुमा देता कि बच्चे तुम सदा छाया में रहना, माया का तुम्हारे ऊपर कोई वार न हो। इसको कहते हैं कदम में पदम, बाबा अपनी लाइट माइट से माया की नज़र उतार देता है। हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं, बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती। ऐसा हम सभी के लिए देखती, सब आकारी रूप में फरिश्ते होते। सबको बाबा रुहानी दृष्टि देता फिर कहता जाओ सारा दिन कामकाज करो, मैं अपना साकारी रूप नहीं देखती। मैं बाबा की परीज़ादी हूँ, बाबा और बाबा के हम बच्चे चमकती हुई मणियां हैं। बस। यह सब सुनाने का सूक्ष्म भाव यह है कि आप सब भी अपने को बहुत-बहुत महान आत्मा समझो। यह अन्डरलाइन करो, हम कम नहीं, पता नहीं यह होशियार हैं, मैं ऐसी हूँ, यह ऐसी, मैं ऐसी, ऐसा कभी भी नहीं सोचो। छोटी भी सुभान अल्ला तो बड़ी भी। छोटी भी महान आत्मा तो बड़ी भी महान।

5) हम सबको निश्चय है हमें भगवान पढ़ाता है, हम ईश्वरीय परिवार के हैं, ब्रह्मा बाबा हमारी गुप्त माँ है, हम भगवान के प्यारे हैं, हम शेरणी शक्तियां हैं। हम सबका टाइटिल, निश्चय, सरनेम एक ही है, हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं, इसलिए कभी भी अपने को नीच नहीं समझो। नम्रता गुण हैं, नीच दासपना है। भावना महान रखो, चलन नम्रता की रखो।

6) शाम का टाइम है देने का, मैं समझती हूँ मैं योग में नहीं बैठती लेकिन जो हमारे शुद्ध संकल्प हैं, याद के संकल्प हैं, वह सारे विश्व में जा रहे हैं, दिखाते हैं देवतायें ऊपर में फेरी पहनते हैं। मैं अनुभव करती जैसे बहुत ऊपर-ऊपर सूर्य खड़ा है, वैसे हम भी खड़े हैं, हमारी योग की भावनायें ऊपर-ऊपर जाती हैं, ऊपर से हम दान दे रहे हैं, जिसको ही हम योगदान कहते हैं। सवेरे का समय हैं अपने में भरने का और शाम का है देने का।

7) हमारे ज्ञान की सबसे पहली बात है कि किसी में भी अटैचमेन्ट न हो, अटैचमेन्ट का पहला कांटा है। अटैचमेन्ट अर्थात् किसी से विशष प्यार.. इसी से चूँ चाँ होती, यही है माथा खपाने वाली बात, यह कांटा किसी में नहीं हो। यह मेरी शुभ भावना है। अच्छा – ओम् शान्ति।